कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

*स्था*पित किया स्वप्न को अपने,
*प*डाव था पहला, जशपुर।
*ना*म दिया कल्याण आश्रम,
*दि*व्य जागरण को आतुर।।
*व*नवासी जन जागृत- हर्षित,
*स*मरस भारत को पाकर।
*ज*न्म दिवस का हर्ष मनाते,
*य*श गाते, सार्थक जीकर।।

स्थापना दिवस विशेषांक

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 31, अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2020 (विक्रम संवत् 2077)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता, डॉ. रंजना त्रिपाठी

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- मकर संक्रांति : कल्याण आश्रम... 2
- कल्याण आश्रम को जानना है तो... 3
- Highlights of E-Vidya 6
- आध्यात्मिक मार्गदर्शन श्रृंखला 9
- कल्याण आश्रम का फेसबुक पेज... 12
- वज्रादपि कठोराणि मृदूनि... 13
- अनुकरणीय... 15
- हौसले बुलंद हैं पूर्वांचल कल्याण... 15
- बोधकथा... सेवा पवित्र करती है 16
- कविता... वनयोगी बालासाहब... 16

मकर संक्रांति : कल्याण आश्रम का क्रांति पर्व

- अनीता बूबना, महानगर वस्तु प्रमुख

आई लेकर नव विहान देखो प्यारी आई संक्रांति
हुआ संचरित नव उत्साह, नवल सूर्य के जादू से।
कोरोना के भय को जीत, निकल पड़े हैं भगिनी बन्धु
लगेंगे कैंप, होंगे दान, लाएंगे फिर जीवन क्रांति
वनवासी हो पल पल आगे, इस हेतु आश्रम सदा सचेतन।

मकर संक्रांति का पर्व अनेक अर्थों में कल्याण आश्रम के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आश्रम की कार्यशैली की दूरगामी योजनाओं को पुष्ति–पल्ल्वित देखने के लिए कल्याण आश्रम के मार्गदर्शकों और कार्यकर्ताओं ने मकर संक्राति के पर्व को विशेष महत्त्व दिया है।

शास्त्रों के अनुसार, दक्षणिायन को देवताओं की रात्रि अर्थात् नकारात्मकता का प्रतीक तथा उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात् सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है। इसीलिए इस दिन जप, तप, दान, स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है। ऐसी धारणा है कि इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर पुन: प्राप्त होता है। इस दिन शुद्ध घी एवं कम्बल का दान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है। जैसा कि निम्न श्लोक से स्पष्ट होता है-

माघे मासे महादेव: यो दास्यति घृतकम्बलम।
स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते मोक्षं प्राप्यति।।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा: में विश्वास करने करने वाली भारतीय संस्कृति का अनुगामी समाज अपने पिछड़े, दलित और शोषित वर्ग के उत्थान के लिए सदा अपना हाथ बढ़ाता रहा है।

कोरोना से भयाक्रांत, ठप्प पड़ी क्रांतिकारी गतिविधियाँ, नए संक्रामक रोगों के आक्रमण की सुगबुगाहट - किंकर्तव्यविमूढ़ कल्याण आश्रम का कार्यकर्ता। किन्तु जैसे ही मकर संक्रांति की भीनी गंध प्रकृति में फैलने लगी कार्यकर्ता समाज सचेतन हो चला। आभासी बैठकों का दौर शुरू हुआ। वर्चुअल गोष्ठियाँ आयोजित होने लगीं। मकर संक्रांति कैम्प की योजनाओं को साकार रूप देने का संकल्प लिया गया।

घोर अंधकार हो, चल रही बयार, हो,
आज द्वार-द्वार पर यह दिया बुझे नहीं,

संकल्प लिया गया कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी कैम्प लगेंगे लेकिन सामाजिक दूरी बनाते हुए। दो गज की दूरी और मास्क जरूरी के मंत्र को अपनाते हुए कैम्प लगाने का बीड़ा उठाने का जोश कार्यकर्ताओं में भर उठा है। रगों में माननीय अटल जी की पंक्तियों के शब्द उत्साह बनकर बहने लगे हैं।

बाधाएं आती हैं आएं,
घिरें प्रलय की घोर घटाएं
पावों के नीचे अंगारे
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं
निज हाथों में हंसते हंसते
आग लगा कर जलना होगा,
कदम मिला कर चलना होगा

समर्पण और निष्ठा के मूर्त रूप कल्याण आश्रम के कार्यकर्तागण को संक्राति पर्व – क्रांति पर्व की सफलता की शुभकामनाएँ देते हुए मैं कामना करती हूँ की नगरीय समाज का सहयोग हमें प्रतिवर्ष कि तरह इस वर्ष भी भरपूर मिलेगा। ■

कल्याण आश्रम को जानना है तो बालासाहब को जान लो!

- आनंद

यह एक सुखद संयोग ही है कि वनवासी कल्याण आश्रम का स्थापना दिवस एवं इसके संस्थापक वनयोगी बाला साहब देशपांडे का जन्म दिवस एक ही दिन 26 दिसंबर को है।सदियों से उपेक्षिति वनवासी समाज को मुख्यधारा में समाहित करने को प्रतिबद्ध सहृदय संवेदनशील वनयोगी के व्यक्तित्व का स्मरण केवल औपचारिक श्रद्धा ज्ञापन मात्र नहीं वरन्सद्भाव एवं सहृदयता की परंपरा के प्रति सम्मान व्यक्त करने का क्षण भी है।(सं) -

बालासाहब देशपाण्डे एक बहुआयामी व्यक्तित्व। कार्यकर्ताओं के अभिभावक। वनवासी के आप्तजन। वकालत हो या सामाजिक कार्य, समाज के प्रति सदैव संवेदनदशील। सतत् बहता हुआ संघ संस्कारों का निर्झर। '**कल्याण आश्रम मेरी पांचवी संतान**'- यह केवल कहने के लिए नहीं तो, अपनी आय में से लम्बे समय तक छात्रावास का व्यय बहन करते हुए, एक दुर्लभ उदाहरण प्रस्तुत करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता। आवश्यकता पड़ने पर प्रधानमंत्री को ज्ञापन देकर देशहित के लिए अग्रसर। एक विरल आध्यात्मिक जीवन। उनके लिए तो केवल एक ही शब्द पर्याप्त है-'**वनयोगी**'।

वर्तमान में कार्यरत, मेरे जेसे कई कार्यकर्ताओं ने तो उनका जीवन पढ़ा,सुना परन्तु ऐसे कई भाग्यशाली कार्यकर्ता हैं जिन्हें उनके साथ काम करने का अवसर भी मिला। हम सभी कार्यकर्ताओं को कठिनतम समय में बल प्रदान करने वाला यह व्यक्तित्व। वे भले ही आज हमारे बीच में नहीं है परन्तु उनसे प्राप्त प्रेरणा इसपथ पर चलने के लिए 'चैतन्य' है, 'ऊर्जा' है।

आज उनका स्मरण करने का कारण है 26 दिसम्बर को उनका जन्मदिन है। वैसे वह कल्याण आश्रम का स्थापना दिन भी है। हमें कल्याण आश्रम को समझना है तो पहले इस देवदुर्लभ व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त करना होगा। उनकी जीवनी हमारे लिए मानो 'गीता' है।

व्यक्ति का जन्म और उसकी मृत्यु उसके हाथ में नहीं होती परन्तु कर्तृत्व से ही व्यक्ति इतिहास गढ़ता है। अपना कार्य करते करते बालासाहब ने ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त की कि जशपुर नगरवासियों ने स्वयं आगे होकर उन्हें नगर के अध्यक्ष का दायित्व दिया। 1960 से 1967 सात वर्षों तक वे अध्यक्ष रहे। कल्याण आश्रम के लिए अधिक समय देना है इसलिए उन्होंने वहां से मुक्ति ली।

वकालत करते हुए अपनी घर-गृहस्थी सम्हालने वाले तो समाज में बहुत होंगे परन्तु साथ-साथ इतना बडा देशव्यापी संगठन खडा करना कोई सामान्य

बात नहीं है। कई उतार-चढ़ाव आए होंगे, प्रत्येक समय में कार्य को प्राधान्यता देते हुए अपने जीवन की रचना करने वाले बालासाहब आज भी अनेकों की प्रेरणा है।

जशपुर हमारे लिए प्रेरणास्थली है। जैसे ही हम कल्याण आश्रम परिसर में जाते है तो एक प्रसन्नता का अनुभव होता है। हम कुछ समय के लिए वर्तमान से अतीत में खो जाते है। बालासाहब ने कैसे काम किया होगा, समय-समय पर कैसे निर्णय किये होंगे? यदि उनकी जीवनी पढी हो तो सारे प्रसंग सामने आ जाते हैं। छात्रावास में बालकों के भोजन हेतु अनाज नहीं और अपने घर से सभी के भोजन की व्यवस्था करना अथवा छात्रावास संचालन हेतु हाथ में कोई राशि नहीं और सभी को रामधुन करने को कहना। सारी रात रामधुन के पश्चात दूसरे दिन पोस्ट द्वारा कोलकता से एक धनादेश (चेक) प्राप्त होना। वनवासी का अपमान सहन न होने पर फादर को एक जोरदार तमाचा जड़ देने का साहस। हाथी पर बैठ कर कोर्ट में आए आरोपी, ईसाई फादर को देख न्यायाधीश को कहना कि यह न्यायपालिका का अपमान है-यह प्रसंगावधान तो दुर्लभ है। सम्पूर्ण देश में प्रवास कर संगठन खड़ा करने का अदम्य विश्वास देखते हैं तो हमारी छोटी-मोटी समस्याओं के समाधान ढूंढ़ने के लिए निश्चित ही बल मिलता है।

वर्तमान के अपने कार्य में जो विविध आयाम हैं, उनमें से कई आयाम बालासाहब के समय में ही प्रारम्भ हुए। कुछ आयामों का नामकरण बाद में हुआ होगा परन्तु बालासाहब की कार्यशैली में हम ऐसे कई आयामों के काम देख सकते हैं। छात्रावास, विद्यालय की स्थापना यह है शिक्षा आयाम, भजन मण्डलियों का गठन और साधु-संतों का वनवासी गाँवों में आगमन अर्थात अपना श्रद्धाजागरण आयाम। इंदौर से वैद्य नारायण शास्त्री को जशपुर आने का निमंत्रण देना और धर्मार्थ चिकित्सालय का प्रारम्भ

यानि अपना चिकित्सा आयाम, जशपुर में बालिका छात्रावास का प्रारम्भ और भिलाई में मातृशक्ति का सम्मेलन है अपना महिला कार्य। युवकों में छिपी प्रतिभा को अवसर प्रदान करने हेतु एकलव्य खेल प्रतियोगिता को प्रारम्भ करना यानि अपना खेलकूद आयाम। तत्कालीन प्रधानमंत्री को ज्ञापन देकर '**भारत में रहने वाले सभी मूलनिवासी हैं**' इस बात का प्रतिपादन यानि आज का अपना हितरक्षा आयाम। ऐसे कई प्रकार के प्रयास और विभिन्न प्रकल्पों की स्थापना के साथ कार्य बढ़ता गया।

कार्य विस्तार करना हो तो संगठन के आर्थिक पक्ष को भी मजबूत करना होगा। इस हेतु नगरों में सम्पर्क कर समाज से सहयोग लेना होगा। इसी विचार के चलते कोलकाता जैसे महानगरों से लेकर अन्य कई नगर-महानगरों में समिति का गठन प्रारम्भ हुआ। कार्यकर्ताओं की बैठकों में बालासाहब कहते थे - नगरीय समाज से केवल धन की अपेक्षा करने के बदले उसे कार्य के साथ जोड़ें, समय देने की अपील करें, तो कार्य को अधिक लाभ होगा। यह मार्गदर्शन आज भी उतना ही सही है जितना उस समय था।

हमारे कार्य की निर्णय प्रक्रिया में अपने वनवासी बन्धुओं का भी योगदान होना चाहिए। अपनी समितियों की रचना हो तो ग्राम स्तर से लेकर अखिल भारतीय समिति तक वनवासी समाज की सहभागिता सदैव उनके मन में थी। उस दिशा में कई प्रयास हुए। इसका मूर्तिमंत उदाहरण है बालासाहब द्वारा किया गया जगदेव राम का चयन। जिन्होंने मा. जगदेव राम जी की कार्यशैली देखी है, उन्हें अनुभूति हुई होगी कि वर्षों पूर्व बाला साहब ने कार्यकर्ता के रूप में कैसा चयन किया था!

1975 के आपातकाल के पश्चात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प. पू. सरसंघचालक मा. बालासाहब देवरस जी की उपस्थिति में एक बैठक सम्पन्न हुई। उस बैठक को कल्याण आश्रम के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण कह सकते हैं। उस समय तक कल्याण आश्रम का कार्य केवल मध्यप्रदेश, उडीसा, बिहार जैसे दो-तीन प्रांतों तक सीमित था, परन्तु इस बैठक में निर्णय हुआ कि अब कार्य को अखिल भारतीय स्तर पर आगे ले जाना है। बस ! निर्णय होते ही बालासाहब का देश भर में प्रवास शुरू हुआ। एक गृहस्थ व्यक्ति ने कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम को देशव्यापी बना दिया। कुछ ही वर्षों में देश के सभी राज्यों के कार्यकर्ता कल्याण आश्रम की अखिल भारतीय बैठक में उपस्थित होते गए और कार्य का विस्तार होता गया।

आज अपने कार्य के माध्यम से हमारा 50 हजार से अधिक गांवों तक सम्पर्क है, 20 हजार से अधिक प्रकल्पों के संचालन द्वारा और विभिन्न आयामों के माध्यम से चल रही गतिविधियों द्वारा समाज जागरण चल रहा है। हम पहले से आगे अवश्य बढे. हैं, परन्तु जनजाति क्षेत्र की विशालता और कार्य की आवश्यकता को देखते हुए हमें बहुत कुछ करना शेष हैं। वनयोगी बालासाहब देशपाण्डे का स्मरण करें और अधिक से अधिक समय देकर कार्य करें - सभी से यही अपेक्षा है। वनयोगी के अनुगामी हम तभी होंगे जब जीवन के अंतिम समय तक कार्यरत रहने का संकल्प करेंगे। यही जीवन की धन्यता है।

(साभार - वनबंधु) ■

Highlights of E-Vidya

- Vasu Goyal, Co-ordinator, E-Vidya

Covid-19 caused a severe disruption in education of students. Though schools moved to an e-classes model, rural students especially from economically weaker background were adversely affected as they lack resources for online education. 'e-Vidya Initiative' was conceptualized in Jun'2020 to fill this void by providing online education to VKA run hostel students.

Starting from just a single teacher, today around 25 Teachers, mostly from non VKA background are taking jointly taking about 50 e-classes per week and 2-3 new teachers are being added to the community each week! They include school teachers, home-makers, tutors, job-holders etc. A commitment to take 2 classes per week and fluency in Bengali is basic requirement for these teachers.

English, Bengali, Maths, Science and Social Science subjects are being taught to students of classes 9-11 and more than 350 classes have been conducted since Jul'20.

Due to tremendous response received from students and volunteers this 'Initiative' was converted into a long term 'Program'. e-Vidya Program's main mission is to promote all round development of vanvasi students through e-learning opportunities and help them realise their full potential.

e-classes are conducted over WhatsApp Video Calls, Google Meet, even direct phone calls in poor network situations. A dedicated Android handset or Tablet at the hostel location is used to ensure uninterrupted classes.

Currently e-classes are being conducted at 6 hostels - Kharibari (Boys), Raiganj (Girls), Kumari (Boys), Mollarpur (Boys), Raotora (Boys) & Nivedita Purulia (Girls). Gosaba (Girls) Hostel will be connected soon. For starting e-classes in a hostel, Video Call testing is done using multiple Video Call Softwares, SIM cards, mobile handsets, locations etc. Network connectivity continues to be a major hurdle.

Each hostel is allotted a 'Hostel Co-ordinator' who prepares a weekly schedule of e-classes, mentors new Teachers and oversees smooth functioning of all e-classes.

For every new Teacher, an 'Introduction cum

Ice-Breaking Session' with the students is conducted by the Hostel Co-ordinator to familiarise. Teaching materials are provided through a centralised Google Drive and books are also purchased and couriered to the Teachers when required.

After each e-class the Teachers fill the class details in an online Google Form to record the progress of syllabus, attendance of students as well as feedback. This data is regularly reviewed to track progress and gain insights to continuously improve teaching quality.

Some Recent Developments

- 'Cognizant Outreach', CSR wing of Cognizant Technology Solutions has also collaborated with e-Vidya Program after several rounds of talks and initially provided 3 amazing teachers! 8 more CTS employees are also waiting to be allotted hostel batches. Several current & retired teachers of Bharatiya Vidya Bhawan school, Salt Lake are also teaching.
- Medical Entrance Exam (NEET) Coaching has been started for Ms. Manashi Soren, an exceptionally bright class-11 Science student of Nivedita Girls Hostel, Purulia, sponsored by Silver Spring Samity.
- 11 PCs have been sanctioned by NTPC Farakka Super Thermal Power Station CSR Wing through efforts of Team e-Vidya for use at hostels.
- A dedicated website evidyaproject.in is being developed to add a professional touch to e-Vidya Program.

  This Program was started by volunteers Sh. Vasu Goyal and Sh. Piyush Agarwal along with support of Sh. Parth Rastogi. From its humble beginnings in June'20 it has come a long way with whole-hearted support of senior PKA volunteers of South Bengal as well as Kolkata Mahanagar. Recently, Smt Shobha Goyal and Smt Shashi Modi have also pitched in their support to manage Nivedita Purulia Hostel's multiple batches of e-classes. ■

आध्यात्मिक मार्गदर्शन श्रृंखला

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, कार्यकर्ता अलीपुर महिला समिति

वह प्रदीप जो दीख रहा है, झिलमिल दूर नहीं है,
थक कर बैठ गए क्यों भाई, मंज़िल दूर नहीं है।

कोरोना महामारी का दक्षिणी ध्रुवी अंधकार भरा अमावस जैसा जब लोग एक दूसरे की झलक पाने को तरस गए, ऐसी विकट परिस्थिति में भी वनवासी कल्याण आश्रम की कोलकाता हावड़ा महानगर समिति ने सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक गतिविधियों की उड़ान को और भी ऊँचाई दी।

पूज्या विजया जी उर्मलिया

पुरुषोत्तम मास के पवित्र अवसर पर अनेक आध्यात्मिक विभूतियों ने कोलकाता-हावड़ा महानगर समिति के मंच से हम सभी कार्यकर्ताओं को अलौकिक जगत के अनछुए प्रसंगों से अवगत कराया।

सबसे पहले इस श्रृंखला में **26 और 27 सितंबर** को **पूज्या विजया जी उर्मलिया** ने पुरुषोत्तम मास के माहात्म्य और प्रभु श्री राम की महिमा को अपनी सरस - सुमधुर वाणी से भगिनी और बन्धु कार्यकर्त्ता को जोड़े रखा। जय श्री राम के उद्घोष के साथ और मंगलाचरण की पावन स्तुति से आभासी परिवेश को भगवद्मय बनाकर विजया जी ने सर्वप्रथम स्व. जगदेव जी उरांव को स्मृति भावांजलि अर्पित की। कोलकाता महानगर के कार्यकर्त्ताओं की रामसेतु में योगदान देने वाली गिलहरी से तुलना की और कहा कि ऐसे योगदानों से ही आध्यात्मिक सेतु का प्रबंध हो पाता है। कोलकाता महानगर के कार्यकर्त्ताओं द्वारा पुरुषोत्तम मास में दिए जाने वाले दान की भी सराहना की और कहा कि यहाँ के कार्यकर्ता बन्धु और भगिनी सदा ही ऐसे प्रशंसनीय उदाहरण समाज के समक्ष रखते रहते हैं। पवित्र – पावन श्री पुरुषोत्तम मास की औपचारिक कथा को प्रारंभ करते हुए अपने संबोधन में पुरुषोत्तम मास की गणना को वैज्ञानिक आधार देने के लिए भारतीय ज्योतिषियों को स्मरण किया और इंगित किया कि सूर्य और चन्द्रमा की गति के अंतर के कारण ही हर तीसरे वर्ष पुरुषोत्तम मास की सृष्टि होती है।

आगे रामकथा में आने वाले पात्रों की चर्चा करते हुए उन पात्रों के जीवन दर्शन को भी अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया। मर्मज्ञा पूज्या विजया जी उर्मलिया ने अपनी सरस - सुमधुर वाणी से कार्यक्रम की आभासी आभा को द्विगुणित कर दिया।

आध्यात्मिक मार्ग–दर्शन श्रृंखला में दिनांक **10 और 11 अक्टूबर** को **श्रीमद्पंचखण्ड पीठाधीश्वर आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महराज** ने पूर्वांचल कल्याण आश्रम के आभासी मंच से अपनी ओजस्वी

आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महराज

वाणी से कहा कि वन्य संस्कृति, धन्य संस्कृति, प्रेम संस्कृति, शांत संस्कृति के नामों से भी जानी जाती है। यह उद्बोधन हम कार्यकर्त्ताओं के लिए अद्भुत मंत्र बन गया। अपनी वार्ता में आगे उन्होंने श्री राम, माँ जानकी और श्री कृष्ण का वनों के साथ तादात्म्य वर्णित किया। अर्जुन की प्रतिज्ञा....**न दैन्यं न पलायनं**...का स्मरण कराते हुए शून्य से सृष्टि करने की याद दिलाई।

आध्यात्मिक मार्ग–दर्शन श्रृंखला में **दिनांक 24 अक्टूबर** को **श्री गुणवंत सिंह जी कोठारी** ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दू जीवन दृष्टि पर अपना गंभीर वक्तव्य देते हुए हिन्दू और हिन्दुत्व के अर्थ

गुणवंत सिंह जी कोठारी

की सारगर्भित व्याख्या की। अपने अप्रतिम उद्बोधन में हिन्दुत्व जीवन पद्धति है, सम्पूर्ण वसुधा माँ है, सम्पूर्ण प्रकृति माता है, ऐसी प्रतिष्ठापना की। चिपको आन्दोलन का उल्लेख करते हुए बताया कि पेड़ों को बचाने के लिए हमारे देश में 365 लोग बलिदान हो जाते हैं। इस उदाहरण द्वारा भारतीय संस्कृति की महानता और जीवन पद्धति को स्पष्ट किया। मानव जाति को विनाश से बचाने के लिए केवल हिन्दू संस्कृति ही मार्गदर्शन कर सकती है, इस दर्शन को स्थापित किया।

आध्यात्मिक मार्ग–दर्शन श्रृंखला में दिनांक **6 नवंबर** सांस्कृतिक पर्व दीपावली के शुभ अवसर पर पुनः पूज्या विजया जी उर्मलिया ने अपने प्रकाशमय उद्बोधन में दुख के कारण का निदान बताया। वेदांत का निर्णय है कि श्रवण, मनन, चिंतन, निदिध्यासन ही एकमात्र दुःख के निवारण का केन्द्र है। संसार में उतरकर हमें व्यावहारिक

सत्य को स्वीकार करना पड़ेगा और विवेचना के लिए विवेक की आवश्यकता होगी। विजया जी ने श्री सूक्त की अलौकिक व्याख्या की। त्योहारों की सांस्कृतिक विरासत को संभालने के लिए इसी श्रृंखला में नवरात्र का सांस्कृतिक महत्त्व और जीवन दर्शन पर अपनी दिव्य वाणी से पूज्या विजया जी उर्मलिया ने मातृशक्ति के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रात:स्मरणीया माँ जानकी, नारी श्रेष्ठा द्रौपदी आदि को स्मरण करते हुए भारतीय संस्कृति में मातृशक्ति के महत्त्व को स्थापित किया। अपनी मंत्रमुग्ध कर देने वाली चिरपरिचित वाक्शैली में नारीशक्ति का अभिनंदन करते हुए कल्याण आश्रम की मातृशक्ति की भूरि – भूरि प्रशंसा भी की।

आध्यात्मिक मार्ग–दर्शन श्रृंखला में पांचवा उद्बोधन अर्जून पुरष्कार से सम्मानित कल्याण आश्रम खेल–कूद प्रकल्प के संरक्षक **माननीय मेजर सुरेन्द्र नारायण माथुर जी** द्वारा **19 दिसंबर 2020** को विश्व के पश्चिमी देशों में सनातन धर्म का प्रभाव विषय पर हुआ। आधुनिक तकनीक के माध्यम से पर्त दर पर्त विषय विवेचना ने सभी कार्यकर्ता बन्धुओं को पूरे समय बाँधे रखा। आपने पावर प्वाइंट प्रेजेंटशन के माध्यम से यूरोप में सनातन संस्कृति के प्रभाव का वर्णन किया।

सनातन धर्म का प्रभाव विषय पर बोलते हुए मेजर माथुर जी अपनी सारगर्भित शैली में कहना शुरू किया। हमारे ज्ञान चक्षुओं को खोलते हुए आपने बताया कि सनातन संस्कृति पूरे विश्व में थी लेकिन दुष्प्रचार करके यह बताया जाता रहा है कि ये सनातन संस्कृति केवल भारत में ही थी। ब्रिटेन के

मेजर सुरेन्द्र नारायण माथुर

राजा भी हिन्दू थे। पूरे यूरोप में सनातन संस्कृति है। किसी भी समय सनातन संस्कृति अपने लिए आंदोलन कर सकती है। पावर प्वांइट प्रेजेंटशन के माध्यम से मेजर माथुर जी इस गंभीर विषय को रोचक बनाते हुए स्पष्ट किया कि रूस, जॉर्जिया आदि यूरोप के सभी देश सनातन संस्कृति से जुड़े हुए है। कैथलिक देश और इंग्लैंड में सभी ईसाई हैं, यह निराधार है। वे लोग हमारे पौराणिक देवी देवताओं को मानते हैं। भगवान परशुराम को मानते हैं। अध्ययन यह बताता है कि परशुराम जी ने यू.के. के सभी द्वीपों को बसाया। आयरलैंड और ब्रिटेन के बीच में आइलपमेन है। ऐसा माना जाता है कि मनु ने इसको बसाया था। ऑस्ट्रिया सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। यहाँ भी भाट होते थे। विशेषकर ब्रिटेन में बाड के गाँव होते हैं, ये भाट के ही रूप हैं। यहाँ के ब्रात्स हमारे वत्स होते हैं। इनका काम पूजा–पाठ कराना है। पूरे यूरोप में रोम

ने आक्रमण करके अपनी संस्कृति थोप दी। चर्च हावी हो गया। रोमन अक्षरों को थोप दिया गया। स्थानीय भाषाओं को नष्ट किया गया। हमारे यहाँ भी यही किया। हम गंगा को गैंजेज कहने लगे। तिथियों के लिए गैगेरियन कैलेंडर को थोप दिया गया। फ्रांस के यहाँ 50 पैसे के सिक्के पर मा दुर्गा का चित्र है। ये देवी भद्रकाली हैं। युद्ध में विजय दिलाने वाली भद्रकाली, जहाँ महाभारत युद्ध के समय भगवान कृष्ण पांडवों को विजय का आशीर्वाद दिलाने ले गए। भद्रकाली को भद्रानी ब्रितनी, ब्रिटोन, ब्रिटेन और ब्रिटेनिया बना। अनंत देवताओं को अग्नि देवताओं के माध्यम से आह्वान करते हैं। ऐसे अनेक शब्द हैं जो सिद्ध करते हैं कि ये लोग भगवान विष्णु को जानते हैं। यूरोप में दानोबी संस्कृति है। दानू ये दूसरी सबसे बड़ी नदी यूरोप की है। दानु का मतलब संस्कृत में द्रव्य है। ये नदियों की देवी है। पूरे यूरोप में इस देवी को पूजा जाता है। मेजर जी ने फ्रांस की एक महिला का जिक्र करते हुए बताया कि हमारे जगदीश उनके दगदा हैं। पूजा पद्धति का वर्णन करते हुए बताया कि ये सिद्ध करता है कि यहाँ भी सनातन संस्कृति का प्रभाव है। हालाँकि चर्च इन्हें यह सुविधा नहीं देती। ये जंगलों में जाकर अपनी पूजा पद्धति को संपन्न करते हैं। ऐसे अनेक शब्द हैं, जिसमें सनातन संस्कृति का प्रभाव है। सारे कैल्टिक त्योहार हमारे त्योहारों से साम्यता रखते हैं। कैलेण्डर में दीपावली को नए वर्ष के रूप में मानते हैं। सबसे पौराणिक विष्णु मंदिर स्कॉट्लैंड के द्वीप में है। अपनी इस अवधारणा को कार्यकर्ताओं के बीच साझा करते हुए मेजर सुरेन्द्र नारायण माथुर जी ने बहुत प्रसन्नता व्यक्त की।

कोरोना-काल में इन उद्बोधन के माध्यम से पूर्वांचल कल्याण आश्रम से जुडे सभी महिला पुरुष कार्यकर्ता स्वयं को वैचारिक और भावनात्मक दृष्टि से समृद्ध अनुभव कर रहे हैं। इस श्रृंखला को प्रति माह इसी प्रकार अव्याहत रूप से चलाने की कार्यकर्ताओं की अभिलाषा है ताकि देश भर के स्वनामधन्य चिंतकों एवं मनीषियों का प्रेरणा पाथेय हमें निरंतर मिलता रहे। समृद्ध, समर्थ तथा वैभवशाली भारत के निर्माण में यह विचार परंपरा हमें सत्पथ दिखाकर अपने ध्येय मार्ग पर अविरत अविराम चलने की प्रेरणा देगी। ■

कल्याण आश्रम का फेसबुक पेज वेरीफाइड हुआ है

इस बात को सूचित करने में हर्ष हो रहा है कि अपने अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम इस फेसबुक पेज को फेसबुक ने कंफर्म कर दिया है। अब इस अकाउंट के सामने नीला टिक हमें दिखाई देगा।

हम सबके लिए यह बहुत बडी उपलब्धि है। इस नीले टिक का मतलब है कि facebook ने कन्फ़र्म किया है कि यह इस सार्वजनिक हस्ती, मीडिया कंपनी या ब्रांड का प्रामाणिक पेज या प्रोफ़ाइल है।

यह टिक केवल मशहूर और अक्सर ज्यादा सर्च किए गए पेज और प्रोफ़ाइल के लिए होता है।

अब हमारा यह पेज अधिकृत, प्रामाणिक और विश्वसनीय पेज बन गया है। हम सबके सामूहिक प्रयास के कारण ही यह संभव हुआ है।

आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद। ■

स्मृति शेष

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि गजानन दा नहीं रहे

आए हो तो जाना होगा,
शाश्वत नियम निभाना होगा।
सूरज रोज किया करता है
ढलने की तैयारी।
करो मन चलने की तैयारी।।

गीतकार रंग जी की उपर्युक्त पंक्तियों को सार्थक करते हुए हम सबके परम श्रद्धेय संरक्षक, मार्गदर्शक माननीय गजानन बापट गत 25 दिसंबर मोक्षदा एकादशी के परम पावन दिन अपराह्न 12:40 पर 88 वर्ष के उम्र में परलोक गमन कर गए। महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले के गणपतीपुले नामक गांव में आपका जन्म 29 मार्च 1931 को हुआ था। पिता श्री दिनकर बापट एवं माता श्रीमती गंगा देवी की कुल 6 संतानों में आप तृतीय संतान थे। बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में खेलकर संस्कार पुष्ट हुए। 1954 में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण कर 2 वर्षों तक बृहत् मुंबई इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई एंड ट्रांसपोर्ट कंपनी में सेक्शन ऑफिसर के रूप में सरकारी नौकरी भी की। किंतु नौकरी में आपका मन नहीं लगा और 1961 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक के रूप में स्वयं को राष्ट्रार्पित कर दिया। 1961 से 1964 तक महाराष्ट्र के औरंगाबाद एवं नांदेड जिले में प्रचारक के रूप में अपनी सेवाएं दी। 1965 में आपका बंगाल के दार्जिलिंग में जिला प्रचारक के रूप में आगमन हुआ। क्रमशः जलपाईगुडी, 24 परगना, हावडा और नवद्वीप में विभाग प्रचारक के रूप में अपनी सेवाएं दी। 1987 में आप पर वनवासी सेवा एवं संगठन कार्यों का दायित्व आया। विभिन्न दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वाह करते हुए 2003 से 2013 तक अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख के नाते आपने वनवासी एवं शहरवासी दोनों क्षेत्रों का सघन प्रवास किया।

2013 से केंद्रीय कार्यकारी मंडल के आमंत्रित सदस्य के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे थे। 15-20 दिन पूर्व अचानक तबियत बिगडी तो चेकअप के लिए कोलकाता के ड्रीमलैण्ड नर्सिंग होम में आपको भर्ती कराया गया। कोरोना वायरस ने आपको ग्रस लिया था। स्थिति निरंतर बिगडती गई और अंततः मल्टीपल ऑर्गन फैलियर के कारण आप परलोक गमन कर गए। ऐसे महामना व्यक्तित्व के अचानक महाप्रयाण से संघ परिवार एवं कल्याण आश्रम परिवार के सभी कार्यकर्ता शोकसंतप्त है। स्नेहपूर्वक सब की पूछताछ करने वाला पितातुल्य अभिभावक हमने खो दिया है। माननीय गजानन दा सच्चे कर्म योगी थे। अनवरत सेवा का व्रत लेकर समाज मंगल हेतु जुटे रहे। मन के हारे हार है मन के जीते जीत की उक्ति को चरितार्थ करते हुए बापट जी जटिल शारीरिक

स्थिति में भी अपरिमित इच्छाशक्ति के बल पर निरंतर काम करते रहे। 2 वर्ष पूर्व उनके मन में आया कि बंगाल एवं पूर्वोत्तर सहित सभी प्रांतों में कल्याण आश्रम के कार्य का बीजारोपण करने वाले वनवासी सेवा कार्यों के पुरोधा **माननीय वसंतराव भट्ट** का जीवन चरित्र बांग्ला भाषा में प्रकाशित किया जाए। 2 वर्षों तक उन्होंने पुस्तक की सामग्री जुटाने एवं उसे प्रकाशित करवाने के लिए अनवरत श्रम किया और 3 माह पूर्व अखिल भारतीय संगठन मंत्री माननीय अतुल जी जोग के कर कमलों से उस पुस्तक का लोकार्पण करवाया। उस पुस्तक का शीर्षक है **सबार आपनजन**। अर्थात् उन्होंने अपनी शारीरिक सीमा को शक्ति में रूपांतरित किया एवं स्वीकृत कार्य को अंत समय तक करते रहे। वे सिद्धांतवादी और धुन के धनी व्यक्ति थे। ऐसे जीवनदानी कार्यकर्ता बहुत कम मिलते हैं। आदर्शों और सिद्धांतों के साथ कभी भी समझौता नहीं किया।सिद्धांतप्रियता, स्नेहशीलता, सेवा परायणता तथा आत्मीयता जैसे गुणों के कारण सभी को स्वजन व सच्चे अभिभावक प्रतीत होते थे। अपने लिए कुछ नहीं चाहा। कभी अपनी कोई असुविधा नहीं जताई। सबको निजता और नजदीकी दी।अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आदर और स्नेह दिया।आत्मीयता के आगार थे।

अनुशासित और अनुकरणीय जीवन शैली के धनी बापट जी की स्मृति सभा कोलकाता के संघ कार्यालय केशव भवन में शताधिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में संपन्न हुई। उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित करने मुंबई से उनके प्रपौत्र श्री पराग बापट एवं कोल्हापुर से नाती श्री विनायक जनार्दन करमकर भी आए थे। उनके समर्पित व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर क्षेत्र श्रद्धाजागरण प्रमुख डॉ. अशोक जाना, क्षेत्र संपर्क प्रमुख श्री चक्रधर सोरेन, क्षेत्र संघचालक माननीय अजय नंदी जी, क्षेत्र प्रचारक प्रमुख श्री रमापद पाल जी, अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष एवं नगरीय कार्य प्रमुख माननीय शंकर जी अग्रवाल, कोलकाता महानगर महिला समिति की सह मंत्री श्रीमती सीमा रस्तोगा, साप्ताहिक स्वस्तिका के पूर्व संपादक श्री विजय आढ्य एवं प्रपौत्र श्री पराग बापट नें श्रद्धांजलि अर्पित की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य माननीय श्री सुनील पद गोस्वामी एवं हिंदू आध्यात्मिक सेवा प्रतिष्ठान के राष्ट्रीय सह संयोजक श्री लक्ष्मी नारायण भाला ने भी अपने आभासी श्रद्धा सुमन अर्पित किए। देह रूप में बापट जी ने महाप्रयाण तो किया है किंतु उनकी सिद्धांत प्रियता, दृढ़ता, आत्मीयता, अनुशासन प्रियता, कार्यनिष्ठा हम सबके हृदय पटल पर चिरकाल तक अंकित रहेगी।आदरणीय लक्ष्मीनारायण भाला की बापटजी पर केंद्रित भावपूर्ण काव्यांजलि है-

सबसे ऊपर एक था परिचय,
आप व्यवस्था-पुरुष रहे ।
जब हो वर्ग, शिविर या बैठक,
याद गजानन दा को करे ।।
अपनापन और स्नेह नयन में,
चेहरे पर मुस्कान रखे ।
संघ-कार्य या कल्याणाश्रम,
सब में वे रममाण दिखे ।।

दिवंगत आत्मा के चरणों में कल्याण आश्रम परिवार की ओर से विनम्र भावपूर्ण श्रद्धांजलि और नमन! ■

अनुकरणीय

- तारा माहेश्वरी

■ कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता अपने सेवा, समर्पण और त्याग के अनमोल उदाहरण प्रस्तुत करते रहते हैं। कार्यकर्ताओं की निष्ठा और नि:स्वार्थ सेवा भावना का ही प्रतिफल है कि कल्याण आश्रम बिना सरकारी अनुदान के फल–फूल रहा है।

कल्याण भारती पत्रिका के अनुकरणीय स्तंभ में एक उदाहरण साझा करने में गर्व की अनुभूति हो रही है। आश्रम के कार्यकर्ता सिर्फ भारत–भूमि पर ही नहीं अपितु हिमालय की गोद में बसे नेपाल के खूबसूरत शहर काठमांडू में भी वनवासी बन्धुओं के उत्थान में समर्पित हैं। हमारे प्रान्तीय चिकित्सा प्रमुख श्री विवेक गोयल जी की प्रेरणा से उनके के चचरे भाई **श्री दीपक केजरीवाल** जो काठमाण्डू में लॉयन्स क्लब के अध्यक्ष हैं, ने नेपाल में चल रहे जनजाति कल्याण आश्रम में पहुँचकर वहाँ के छात्रावास के लिए 1.50 लाख की धनराशि भेंट की। इसके अतिरिक्त सहयोग एवं सहभोज कार्यक्रम के अतर्गत खाद्य सामग्री और लैपटॉप भेंट किया । कल्याण आश्रम परिवार आपके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

■ N.M.O(National Medical Organization) के अध्यक्ष वरिष्ठ चिकित्सक डॉ प्रभात सिंह जिस तत्परता और सक्रियता से हमारे कार्यकर्ताओं की देखरेख कर रहे हैं वह सचमुच स्तुत्य हैं। स्वर्गीय बापट जी की जिस निस्वार्थ भाव से उन्होंने अहर्निश सेवा की इसके लिए पूरा कल्याण आश्रम परिवार अहो भाव से आपूरित है। डॉक्टर साहब को नमन! ■

हौसले बुलंद हैं पूर्वांचल कल्याण आश्रम युवा समिति के

- शशी मोदी

रख हिम्मत तूफानों से टकराने की,
जरूरत नहीं किसी मुसीबत से घबराने की।
फिर देख किस्मत क्या – क्या रंग दिखलाएगी,
तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी।।

निवेदिता छात्रावास की एक छात्रा सुश्री मानसी सोरेन ने इस साल माध्यमिक में 84% अंक हासिल किए। वह डॉक्टर बनना चाहती है।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम युवा समिति ने मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश हेतु आयोजित होने वाली अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा NEET 2022 के लिए उसकी कोचिंग की व्यवस्था की है।

डॉ देबज्योति कर ने कोचिंग संभालने का दायित्व सहर्ष स्वीकार कर लिया। कोचिंग निर्बाध गति से चले इसके लिए डॉ. कर द्वारा बहुमूल्य सुझाव दिए गए, सुझावों के अनुरूप निम्नलिखित व्यवस्था की जा रही है-

इंटरनेट: जियो फाइबर नेट कनेक्टिविटी स्थापित कर दी गई।

कम्प्यूटर: निवेदिता छात्रावास में पहले से उपलब्ध हैं।

एक सैमसंग टैब भेजा जा रहा है। उसके लिए एक मोबाइल फोन की व्यवस्था की जाएगी ताकि वह कोचिंग टीम के साथ निर्बाध रूप से संपर्क कर सके।

डॉ. पार्थ मित्रा द्वारा पुस्तकों का एक सेट ऑनलाइन ऑर्डर कर दिया गया और बहुत शीघ्र छात्रावास पहुँचने की संभावना है। ।

मानसी, निवेदिता छात्रावास टीम, पूर्वांचल कल्याण आश्रम युवा समिति विशेष रूप से वासु, पीयूष और निर्मल जी अग्रवाल को बधाई और शुभकामनाएं।

इस पावन प्रयास के लिए सभी कार्यकर्ता भगिनी – बन्धुओं को साधुवाद । ■

बोधकथा

सेवा पवित्र करती है

सेवा करने वाले हाथ कभी मैले या अपवित्र नहीं होते। उन हाथों में अद्भुत शक्ति और क्रियाशीलता होती है। बे जिस चीज को छू दें, बह पवित्र हो जाती है।

एक सुन्दर प्रसंग है। सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी आनन्दपुर में एक दिन धार्मिक प्रवचन कर रहे थे। भक्तजनों को उनकी अमृतवाणी पुलकित कर रही थी। कुछ समय तक उपदेश देने के बाद गुरु जी को कुछ थकाबट अनुभव हुई उन्होंने जल पीने की इच्छा प्रकट की। कई भक्त एक साथ उठ खडे.हुए। गुरु जी ने कहा- "जिसके हाथ पवित्र हों, वही आधा लोटा जल लाकर दें।" वहाँ उपस्थित लोगों में एक धनी व्यक्ति भी बैठा था। उसने गुरु जी के भक्तों से कहा- "आप लोग तो दिन रात गुरु जी की सेवा में लगे रहते हैं। इस सेवा का अवसर मुझे दें।" धनी व्यक्ति ने अनुमति पाकर बर्तन में जल लिया और लाकर गुरु जी के हाथों में थमा दिया। बर्तन पकड.ते समय गुरु जी के हाथों को उस व्यक्ति के कोमल हाथों का स्पर्श मिला। वे गम्भीर हो गये।

सेवा मनुष्य का अन्त:करण, शरीर के अंग-ग्रत्यंग और सम्पूर्ण जीवन को पवित्र कर देती है। जिनके हाथ दूसरों की सेवा में तल्लीन रहते हैं, वे जिस वस्तु को छू देते हैं, वह पवित्र हो जाती है। सेवा में श्रद्धा रखनेवाला ईश्वर की कृपा सहज ही ग्राप्त कर लेता है।

उन्होंने धनी व्यक्ति से पूछा-"क्या तुम कोई काम नहीं करते? इतने कोमल हाथ तो उसी के हो सकते हैं जो आरामतलब या दूसरों की सेवा पर आश्रित हो।"

धनी व्यक्ति ने झेंपते हुए कहा- "गुरु महाराज! आपने ठीक ही समझा है। मेरे घर में बहुत से नौकर-चाकर हैं। वे सारा काम कर देते हैं। मुझे अपने हाथों से कोई काम करने का अवसर ही नहीं मिलता है।"

गुरुजी ने जल का बर्तन नीचे रखते हुए, उस धनी व्यक्ति से कहा- "तुम्हारे हाथ अपवित्र हैं। तुमने दूसरों से सेवा कराई है, स्वयं किसी की सेवा नहीं की। ऐसे हाथों से दिया हुआ जल मैं कैसे पी सकता हूँ जो सेवा से पवित्र न हुए हों।"

धनी व्यक्ति के हृदय पर इस बात का बडा गहरा प्रभाव पड़ा। वह न केवल स्वावलम्बी बन गया, बल्कि उसने दूसरों को सेवा करना अपने जीवन का लक्ष्य भी बना लिया। ■

कविता

वनयोगी बालासाहब देशपांडे जी

- लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्ष्मीदा'

बनयोगी बालासाहब को,
नत मस्तक हो करें नमन ।।ध्रु।।

योग्य पुत्र, भाई, जन सेवक,
गीता-ज्ञान जिया अनुपम।
बाल्य-काल से देश भक्ति का,
लावा उबल रहा था मन ।।1।।
नत मस्तक हो....

सारा जीवन किया समर्पित,
हत-बल बनबासी के हित।
बल पाकर स्वाभिमान जागा,
देश-धर्म हित है तन-मन।।2।।
नत मस्तक हो...

शहर निवासी बन वनवासी,
पांडव सम कल्याण आश्रम।
डेरा डाला जाकर जशपुर,
जीवन का सार्थक हर क्षण ।।3।।
नत मस्तक हो... ■

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग, 2 तल्ला, कमरा नं. 51

कोलकाता - 700007, दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792